परिवार कल्याण के प्रति थारू जनजातीय महिलाओं की जागरूकता का समाजशास्त्रीय अध्ययन

–डॉ कनिका पाण्डेय एवं डॉ. अनीता देवी*
एसोसिएट प्रो. समाजशास्त्र
साहू राम स्वरूप महिला महाविद्यालय, बरेली
*एसो.प्रोफे.–समाजशास्त्र
डॉ. आर.एम.एल. गवर्नमेण्ट डिग्री कॉलेज,
आँवला–बरेली

शोध सारांश

स्वतन्त्रता के पश्चात् भारत में प्रशासनिक एवं आर्थिक दोनो ही व्यवस्थाओं के अन्तर्गत समाज के निर्बल एवं पिछड़े वर्गो के उन्नयन एवं उनको समुचित अधिकार प्रदान करने की नीति को स्वीकार किया गया है। जहॉ तक सामाजिक व आर्थिक रूप से पिछड़ेपन की बात है अनुसूचित जनजातियॉ समग्र भारत में पिछड़ी हुई है। वर्तमान समय में थारू जनजाति की अनेक आर्थिक समस्याओं जैसे प्रति व्यक्ति निम्न आय, रहन–सहन का निम्न स्तर, बचत व विनियोग का निम्न स्तर व ऋणग्रस्तता इत्यादि के मूल में जनसंख्या की अत्यन्त तीव्र बृद्धि ही मूल कारण है। अतः इन समूहों की सामाजिक, आर्थिक स्थिति में सुधार हेतु किसी नीतिबद्ध आयोजन हेतु यह आवश्यक है कि विस्तृत सामाजिक व्यवस्था के अंश के रूप में इनके समकालीन स्वरूप को समझा जाए तथा विकास के प्रतिमान क्षेत्रीय व स्थानीय स्तरों पर व्याप्त विषमताओं एवं सामाजिक आर्थिक विभिन्नताओं के व्यापक ज्ञान के साथ–साथ परिवार कल्याण के प्रति जनजातीय महिलाओं की जागरूकता का व्यापक ज्ञान उपलब्ध हो। इसी वैचारिक पृष्ठभूमि के संदर्भ में कुमायूँ प्रखण्ड की थारू जनजाति के अध्ययन के प्रयास को समस्या विशिष्ट की व्यापक परिधि में संकलित करते हुए परिवार कल्याण के प्रति थारू जनजातीय महिलाओं की जागरूकता की अध्ययन किया गया है।

प्रस्तावना

स्वतन्त्र्योत्तर भारत में संविधान द्वारा समाज के पिछड़े वर्ग के सर्वागीण उत्थान हेतु प्रतिपादित कल्याणकारी नीतियों के फलस्वरूप जनजातीय समाज का परम्परागत संरचनात्मक ढांचा चरमराने लगा है। शासन द्वारा प्रतिपादित विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं के बावजूद भी भारतीय जनजातीय समुदाय सामाजिक सांस्कृतिक व आर्थिक समस्याओं से मुक्त नहीं हो पाया। जनजातीय समाज की विभिन्न समस्याओं को समाप्त करने के लिए आवश्यकता इस बात की है कि जनसंख्या बृद्धि की दर को कम किया जाये। तेजी से बढ़ती हुई जनसंख्या की गम्भीरता को ध्यान में रखते हुए कल्याणकारी राज्य ने जनजातीय व अजनजातीय दोनो ही समाजों में परिवार कल्याण योजना को लागू किया है ताकि परिवार कल्याण के माध्यम से सामाजिक सांस्कृतिक विकास को सुदृढ किया जा सके।

जनजातीय विशेषताओं को लिए हुए थारू जनजाति उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश, निकटवर्ती बिहार तथा उसके सीमावर्ती नेपाल के समानान्तर क्षेत्रों में फली हुई है। प्रस्तुत अध्ययन में उत्तराखण्ड के उधम सिंह नगर जनपद की खटीमा तहसील के दो गाँवों बिगरा

बाग व पहैनिया को समग्र के रूप में चुना गया है। इन गाँवो में 50 प्रतिशत से अधिक जनजातीय जनसंख्या निवास करती है जिनमें से लगभग 50 प्रतिशत महिलाऐं है इन महिलाओं में से निदर्शन प्रविधि की लॉटरी प्रणाली द्वारा 100 विवाहित थारू महिलाओं को अध्ययन ईकाई के रूप में चुना गया।

तालिका–1

अध्ययन समग्र

थारू जनजातीय बाहुल्य वाले गाँव	कुल जनसंख्या	थारू जनसंख्या		कुल थारू जनसंख्या
		स्त्री	पुरूष	
1– बिगरा बाग	2114	698	674	1372
2– पहैनिया	1841	529	504	1033
योग–2	3955	1227	1178	2405

अध्ययन के उद्देश्य– उपरोक्त अध्ययनात्मक समस्या की अनुसंधानात्मक परियोजना को व्यावहारिक स्वरूप प्रदान करने की दृष्टि से अध्ययन के विशिष्ट उद्देश्यों की रूपरेखा इस प्रकार रही है।

1. थारू महिलाओं की सामाजिक प्रस्थिति व भूमिका का अध्ययन करना।
2. सरकार द्वारा प्रतिपादित परिवार कल्याण सम्बन्धी योजनाओं के प्रति थारू महिलाओं की जागरूकता का अध्ययन करना।

उपकल्पना– प्रस्तुत शोध में निम्न उपकल्पनाओं को निर्मित किया गया ताकि अध्ययन कार्य को सुनिश्चित एवं सुनिर्देशित किया जा सके।

1. अशिक्षा व रूढिवादी प्रवृति के कारण थारू महिलाएं परिवार कल्याण की राष्ट्रीय नीति के प्रति जागरूक नहीं है।
2. कम उम्र की थारू महिलाऐं परिवार कल्याण के प्रति अधिक जागरूक है।

प्रस्तुत अध्ययन में परिवार कल्याण की राष्ट्रीय नीति के प्रति थारू महिलाओं की जागरूकता का मापन करने के लिए अंक पैमाने का प्रयोग किया गया है। अंक पैमाने में अध्ययन विषय से सम्बन्धित विभिन्न स्थितियों अथवा कथनों को संकलित करके एक सूची में व्यवस्थित कर लिया गया है। इसके पश्चात इन कथनों के विषय में उत्तरदाताओं की राय ज्ञात की गयी। उत्तरदाताओं से कहा गया कि वे जिस कथन से सहमत है अथवा जिसे अपने लिए सर्वाधिक उपयुक्त मानती है, उसके आगे सही का निशान लगा दे। प्रत्येक कथन को सहमत अनिश्चित व असहमत के आधार पर 2, 1, व 0 अंक प्रदान किया गया है। उत्तरदाताओं द्वारा कथनों पर लगाए गये चिन्हों के आधार पर उत्तरदाताओं को अंक प्रदान किये गये और प्राप्त अंको के आधार पर उत्तरदाताओं की जागरूकता का मापन किया गया है।

अध्ययन की समग्र व्यवस्था से परिचित होने की दृष्टि से अंकन का विवरण कथन के क्रम के अनुसार जागरूकता के स्वरूप निर्धारण क्रम में दर्शाया गया है।

	जागरूकता के आयाम	प्रतिक्रिया एवं अंकन		
		सहमत	अनिश्चित	असहमत
1–	परिवार के आकार को सीमित रखने में बच्चों की उम्र में अन्तर रखने के लिए किसी गर्भ निरोधक का प्रयोग करना उचित है।	2	1	0
2–	स्वस्थ व खुशहाल बालिका ही विकासोन्मुख समाज की आधारशिला है।	2	1	0
3–	एक शिक्षित महिला ही परिवार कल्याण में सकारात्मक भूमिका निभा सकती है।	2	1	0
4–	परिवार के आकार को सीमित रखना महिलाओं का भी उत्तरदायित्व है।	2	1	0
5–	कानून द्वारा विवाह की न्यूनतम आयु लड़कियों के लिए 18 वर्ष व लड़कों के लिए 21 वर्ष उचित है।	2	1	0
6–	विवाह की न्यूनतम आयु लड़कियों के लिए 21 वर्ष व लड़कों के लिए 24 वर्ष कर देनी उचित है।	2	1	0
7–	दो बच्चों के बाद नसबन्दी योजना ऐच्छिक होनी चाहिए।	2	1	0
8–	दो बच्चों के बाद नसबन्दी योजना अनिवार्य होनी चालिये।	2	1	0
9–	संतति क्रम के लिए केवल सन्तान का होना आवश्यक है, न कि केवल बेटे का।	2	1	0
10–	गर्भावस्था में प्रशिक्षित दाईयों या चिकित्सकों द्वारा निरीक्षण करवाते रहना तथा प्रसव के समय प्रशिक्षित दाईयों की सेवाये प्राप्त करना आवश्यक है।	2	1	0
11–	शिक्षा के प्रचार द्वारा परिवार कल्याण कार्यक्रम को सफल बनाया जा सकता है।	2	1	0
12–	सरकार द्वारा स्वास्थ्य व परिवार कल्याण सेवाये ग्राम स्तर पर उपलब्ध करायी जानी चाहिये।	2	1	0
13–	जनसंख्या शिक्षा से ग्रामवासियों को भी परिचित कराया जाना आवश्यक है।	2	1	0
14–	दस्त से बच्चे के शरीर में पानी की कमी हो जाती है।	2	1	0

15– मॉ का दूध नवजात शिशु के लिए सर्वोत्तम
भोजन है। 2 1 0

उत्तरदाताओं द्वारा प्रश्नों पर लगाये गये चिन्हों के आधार पर उत्तरदाताओं को अत्याधिक जागरूक, जागरूक, तटस्थ, उदासीन व अत्याधिक उदासीन पांच श्रेणियों में विभाजित किया गया है इस विभाजन को अंक व श्रेणी विभाजन के द्वारा तालिका नम्बर 02 के द्वारा स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है।

तालिका –2

जागरूकता का माप

श्रेणी	प्राप्तांक
अत्याधिक जागरूक	25–30
जागरूक	19–24
तटस्थ	13–18
उदासीन	7–12
अत्याधिक उदासीन	0–6

तालिका–03

जागरूकता मापन हेतु प्रत्येक कथन के संदर्भ में प्राप्त प्रतिक्रियाओं का विवरणः–

कथन	सहमत	अनिश्चित	असहमत	योग
क्रम0स0	संख्या व प्रतिशत	संख्या व प्रतिशत	संख्या या प्रतिशत	
1	21	59	20	100
2	62	21	17	100
3	20	42	38	100
4	10	18	72	100
5	30	19	51	100
6	00	00	100	100
7	100	00	00	100
8	04	40	56	100
9	01	36	63	100
10	24	16	60	100
11	14	20	66	100
12	65	14	21	100
13	20	38	42	100
14	30	39	31	100
15	80	10	10	100
योग	481	372	647	1500

तालिका–04

जागरूकता मापन हेतु प्रत्येक कथन के संदर्भ में प्राप्त अंको का विवरणः–

कथन क्र.स.	सहमत		अनिश्चित		असहमत		योग
	प्राप्तांक	मान	प्राप्तांक	मान	प्राप्तांक	मान	
1	42	2	59	1	0	0	101
2	124	2	21	1	0	0	165
3	40	2	42	1	0	0	82
4	20	2	18	1	0	0	38
5	60	2	19	1	0	0	79
6	00	2	00	1	0	0	00
7	200	2	00	1	0	0	200
8	08	2	40	1	0	0	48
9	02	2	36	1	0	0	38
10	48	2	16	1	0	0	64
11	28	2	20	1	0	0	48
12	130	2	14	1	0	0	144
13	40	2	38	1	0	0	78
14	60	2	39	1	0	0	99
15	160	2	10	1	0	0	170
योग	962		372				1334

परिवार कल्याण की राष्ट्रीय नीति के प्रति थारू महिलाओं की जागरूकता मापन हेतु निर्मित उपरोक्त 15 कथनों के सन्दर्भ में प्रतिदर्श में सम्मिलित 100 थारू महिलाओं का अंको का योग 1334 है व्यक्तिगत तौर पर प्रत्येक उत्तरदाता की जागरूकता के मापन हेतु प्रत्येक उत्तरदाता के अंको का अलग अलग योग किया गया तथा प्रत्येक उत्तरदाता को प्राप्त अंको के आधार पर अत्यधिक जागरूक, जागरूक, तटस्थ, उदासीन, तथा अत्याधिक उदासीन इत्यादि 5 श्रेणियों में विभक्त किया गया।

तालिका–05

अंको के आधार पर जागरूकता की विभिन्न श्रेणियों में विभाजन का विवरण–

जागरूकता की श्रेणियाँ	प्राप्तांक	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
अत्याधिक जागरूक	25–30	2	2
जागरूक	19–24	19	19
तटस्थ	13–18	24	24
उदासीन	7–12	25	25
अत्यधिक उदासीन	0–6	30	30
योग		100	100

तालिका संख्या 05 से स्पष्ट है कि परिवार कल्याण की राष्ट्रीय नीति के प्रति थारू महिलाएं जागरूक नहीं है प्रत्येक थारू महिला के औसत अंको का योग 13.34 है जो कि अत्याधिक कम है। औसत रूप से सभी थारू महिलाएं परिवार कल्याण की नीति के प्रति तटस्थ है। थारू महिलाओं में व्याप्त अशिक्षा इसका प्रमुख कारण है शिक्षा के द्वारा ही ज्ञान का प्रकाश फैलता है। शिक्षा के अभाव में थारू महिलाएं सरकार द्वारा चलाई जा रही कल्याणकारी योजनाओं के प्रति पूरी तरह अनभिज्ञ है।

जागरूकता तथा शैक्षिक स्तर– शिक्षा के द्वारा मानव में सोचने समझने की क्षमता का विकास होता है, उसका विवके जाग्रत होता है विवकेशील व्यक्ति जीवन की प्रत्येक परिस्थिति में प्रति जागरूक रहता है इसलिए जागरूकता व शिक्षा में घनिष्ट सम्बन्ध है।

तालिका–06

जागरूकता एवं शैक्षिक स्तर सम्बन्धी विवरण

जागरूकता की श्रेणियाँ	निरक्षर	प्राइमरी	जूनियर हाईस्कूल	हाईस्कूल	इण्टर	बी0ए0	योग
अत्याधिक जागरूक						2	2
जागरूक			5	10	4		19
तटस्थ	4	10	10				24
उदासीन	15	10					25
अत्यधिक उदासीन	20	10					30
योग	39	30	15	10	4	2	100

उत्तरदाताओं में से 2 बी.ए., 4 इण्टरमीडिएट, 10 हाईस्कूल, 15 जूनियर हाईस्कूल, 30 प्राइमरी व 39 निरक्षर है। 2 अत्यधिक जागरूक उत्तरदाता बी0ए0 तक शिक्षित है, 19 जागरूक उत्तरदाताओं में से 5 जूनियर हाईस्कूल 10 हाईस्कूल व 4 इण्टरमीडिएट तक शिक्षित है। 24 तटस्थ उत्तरदाताओं में से 10 जूनियर हाईस्कूल 10 प्राइमरी व 4 निरक्षर है। 25 उदासीन उत्तरदाताओं में से 10 प्राइमरी व 15 निरक्षर है। 30 अत्यधिक उदासीन उत्तरदाताओं में से 10 प्राइमरी व 20 निरक्षर है।

जागरूकता तथा आयु समूह– शोध के द्वारा यह भी स्पष्ट हुआ कि न केवल जागरूकता व शैक्षिक स्तर परस्पर सह सम्बन्धित है बल्कि जागरूकता व आयु समूह भी परस्पर सम्बन्धित है। चूंकि आयु समूह और शैक्षिक स्तर परस्पर सम्बन्धित हैं। ज्यो–ज्यों आयु समूह घटता है, शैक्षिक स्तर बढ़ता है क्योंकि हर नयी पीढी पुरानी पीढ़ी से ज्ञान और विज्ञान के क्षेत्र में अधिक उन्नत होती है और समाज को आगे बढ़ाती है। इस प्रकार आयु समूह तथा शैक्षिक स्तर तथा शैक्षिक स्तर व जागरूकता के परस्पर सम्बन्धित होने के कारण आयु समूह तथा जागरूकता भी परस्पर सहसम्बन्धित है इसका सम्पूर्ण विवरण निम्न तालिका में प्रस्तुत है।

तालिका–07
जागरूकता व आयु समूह सम्बन्धी विवरण –

	आयु समूह वर्षो में				
जागरूकता की श्रेणियाँ	10–20	20–30	30–40	40–50	योग
अत्याधिक जागरूक		2			2
जागरूक	8	7	4		19
तटस्थ		6	10	8	24
उदासीन		4	7	14	25
अत्यधिक उदासीन		3	7	20	30
योग	8	22	28	42	100

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि अत्यधिक जागरूक उत्तरदाता 20–30 वर्ष आयु समूह के है। जागरूक उत्तरदाताओं में से 8 उत्तरदाता 10–20 वर्ष आयु समूह, 7 उत्तरदाता 20–30 वर्ष आयु समूह, 4 उत्तरदाता 30–40 वर्ष आयु समूह के है। तटस्थ उत्तरदाताओं में से 6 उत्तरदाता 20–30 वर्ष आयु समूह, 10 उत्तरदाता 30–40 वर्ष आयु समूह व 8 उत्तरदाता, 40–50 वर्ष आयु समूह के है। उदासीन उत्तरदाताओं में से 4 उत्तरदाता 20–30 वर्ष आयु समूह, 7 उत्तरदाता 30–40 वर्ष आयु समूह व 14 उत्तरदाता 40–50 वर्ष आयु समूह के है। अत्यधिक उदासीन उत्तरदाताओं में से 3 उत्तरदाता 20–30 वर्ष आयु समूह के, 7 उत्तरदाता 30–40 वर्ष आयु समूह व 20 उत्तरदाता 40–50 वर्ष आयु समूह के है, स्पष्ट है कि जैसे–जैसे आयु समूह बढ़ा है वैसे–वैसे जागरूकता कम होकर उदासीनता बढ़ी है, जबकि आयु समूह के घटने के साथ–साथ जागरूकता बढ़ी है।

निष्कर्ष रूप में परिवार कल्याण की राष्ट्रीय नीति के प्रति औसत रूप से थारू महिलाओं की जागरूकता तटस्थ स्तर पर है। इसके लिए थारू महिलाओं की अशिक्षा व निर्धनता के साथ–साथ शासन तन्त्र की शिथिलता भी उत्तरदायी है। परिवार कल्याण कार्यक्रम की सफलता के लिए थारू समाज में शिक्षा के अत्यधिक प्रचार प्रसार की आवश्यकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

1. गवर्नमेन्ट ऑफ इण्डिया – फेमिली वेल्फेयर प्रोग्राम इन इण्डिया, ईयर बुक, 1984–85, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, परिवार कल्याण विभाग।
2. राव. डी. गोपाल – पापुलेशन एजूकेशन, एस चन्द्र एण्ड कम्पनी प्राइवेट, लिमिटेड, न्यू दिल्ली, 1961
3. चन्द्र शेखर, एस.– इन्फेन्ट मोरिलटी, पापुलेशन ग्रोथ एण्ड फैमिली, प्लानिंग इन इण्डिया।
4. बोस, एन.के.– सम इण्डियन ट्राइब्स, नेशनल बुक ट्रस्ट, इण्डिया, न्यू देहली, 1972
5. माल्थस, टी0आर0–एन0एसे ऑन द प्रिंसिपल ऑफ पापुलेशन, 1805
6. सेंशस ऑफ इण्डिया –2011